ISSN : 2320-0391

साहित्य और संस्कृति

सृजन सृಜನ

हिंदी-कन्नड त्रैमासिक पत्रिका

ಹಿಂದಿ-ಕನ್ನಡ ತ್ರೈಮಾಸಿಕ ಪತ್ರಿಕೆ

Peer Reviewed Journal

जनवरी-मार्च २०२३

स्वतंत्रता संग्राम में भारतीय साहित्य का अवदान

विशेषांक

38.	स्वतंत्रता संग्राम में हिंदी साहित्यकारों की भूमिका	• डॉ. डी. एम. मुल्ला	87
39.	स्वदेश दीपक की नाट्य कृतियां में राष्ट्रीय-चेतना	• डॉ. अमित चिंगली	89
40.	स्वतंत्रता संग्राम में भारतीय कवियों का योगदान	• प्रो. जमादार रुकसाना एल.	91
41.	स्वतंत्र सेनानी: कित्तूर रानी चेन्नम्मा	• डॉ. महादेव जे. संकपाल	93
42.	स्वतंत्रता संग्राम में नाटककार भारतेंदु हरिश्चंद्रजी का योगदान	• डॉ.श्रीमती नलिनी कुलकर्णी	95
43.	कर्मवीर वीरांगना - सुभद्रा कुमारी चौहान	• डॉ. दुर्गारत्ना. सी,	97
44.	स्वतंत्रता संग्राम में भारतीय स्वतंत्रता सेनानियों का योगदान	• श्रीमती गीता वी. निक्कम	99
45.	गयाप्रसाद शुक्ल 'सनेही' के काव्य में राष्ट्रीय चेतना	• डॉ. कृष्णा डी लमाणि	102
46.	स्वतंत्रता संग्राम में हावेरी जिला के महिलाओं का योगदान	• डाँ महादेवी कणवी	105
47.	स्वतंत्रता आन्दोलन में हिंदी उपन्यासों का योगदान	• नीरू	107
48.	स्वतंत्रता संग्राम में भारतीय साहित्या का अवदान (स्वतंत्रता संग्राम में भारतीय उपन्यासकारों का योगदान)	• श्री फणिराज एम्. ए.	109
49.	भारतीय स्वतंत्र संग्राम में वीरांगना झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई का योगदान	• श्री.प्रदीप चन्नबसप्प.घाली	111
50.	स्वतंत्रता संग्राम में झारखंड के स्वतंत्रता सेनानियों का योगदान	• पुष्पा कुमारी	113
51.	गांधीवाद से प्रभावित प्रेमचंद के उपन्यास	• राहुल. लक्ष्मण. कासार	115
52.	स्वतंत्रता संग्राम में शैलेंद्र और उनके गीत	• रजनीश कुमार	117
53.	स्वतंत्रता संग्राम में भारतीय पत्रकारों का योगदान	• डाँ. षण्मुखप्प. डि. कारभारि	119
54.	भारतीय वीरांगनाएँ - परशुराम शुक्ल की कुछ कहानियाँ	• श्रीनिवास नायक	121
55.	आजादी की लड़ाई कलम से भी लड़ी गई थी	• डॉ. सुनील कुमार यादव	123
56.	भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में हिंदी कवियों का योगदान	• डॉ. वीरेश बिसनल्लि	126

स्वतंत्र सेनानी: कित्तूर रानी चेन्नम्मा

• डॉ. महादेव जे. संकपाल

भारतीय राजवंशों में कई ऐसी रानियां रही हैं, जिनकी शौर्य गाथाएं विश्व इतिहास में दर्ज हैं। ऐसी ही एक वीरांगना थीं रानी चेन्नम्मा। रानी चेन्नम्मा उन चुनिंदा भारतीय शासकों में हैं, जिन्होंने अंग्रेजों को बुरी तरह हराया था। कहा जाता है कि रानी अबक्का से हारने के बाद दुनियाभर में जैसी बदनामी पुर्तगालियों की हुई थी, कुछ वैसी ही फजीहत अंग्रेजों की हुई रानी चेन्नम्मा से हारने के बाद।

कित्तूर रानी चेन्नम्मा का जन्म 14 नवंबर, 1778 को कर्नाटक के बेलगाम जिले के एक छोटे से गाँव 'काकती' में हुआ था। बचपन से ही उन्हें पारिवारिक परंपरा के अनुसार तलवारबाजी, तीरंदाजी और घुड़सवारी का प्रशिक्षण दिया गया था। चेन्नम्मा की शादी 15 साल की उम्र में राजा मल्लसरजा नाम के एक देसाई परिवार में हुई थी।

रानी चेन्नम्मा भारत की पहली महिला स्वतंत्रता सेनानी थीं। कित्तूर की रानी, जिसे कित्तूर रानी चेन्नम्मा के नाम से भी जाना जाता है । रानी चेन्नम्मा को अंग्रेजों के खिलाफ विद्रोह करने वाली पहली महिला शासकों में से एक माना जाता है। उन्हें ईस्ट इंडिया कंपनी के खिलाफ 1824 के विद्रोह के लिए जाना जाता है, जो उनके खिलाफ पहला युद्ध हार गई थी। इस उपलब्धि ने उन्हें कर्नाटक संस्कृति में एक लोक नायिका और स्वतंत्रता आंदोलन के एक प्रमुख प्रतीक के रूप में बदल दिया।

कित्तूर चेन्नम्मा का अंग्रेजों के खिलाफ संघर्ष :

अगर हम कित्तूर रानी चेन्नम्मा की जानकारी में गहराई से जाए तो 1824 में अपने पति और इकलौते बेटे की मृत्यु के बाद, वह ब्रिटिश शासन से कित्तूर साम्राज्य की एकमात्र रक्षक थी। कित्तूर के ब्रिटिश अधिग्रहण से बचने के लिए, उन्होंने उसी वर्ष शिवलिंगप्पा को गोद ले लिया और उन्हें सिंहासन का उत्तराधिकारी बनाया। अंग्रेजों ने शिवलिंगप्पा को उत्तराधिकारी के रूप में मान्यता नहीं दी । कित्तूर, सेंट जॉन ठाकरे और कित्तूर राज्य धारवाड़ कलेक्ट्रेट के आयुक्त श्री चैपलिन के अधिकार क्षेत्र में आ गए। रानी चेन्नम्मा ने बॉम्बे प्रेसीडेंसी के लेफ्टिनेंट-गवर्नर माउंटस्टुअर्ट एलफिन्स्टन को कई पत्र भेजकर राज्य के लिए अपना पक्ष रखने की कोशिश की, लेकिन उन्हें खारिज कर दिया गया, जिससे एक चौतरफा युद्ध हुआ। उन्हें 1824 में ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी के खिलाफ सशस्त्र विद्रोह का नेतृत्व करने के लिए जाना जाता है। यह 1857 के स्वतंत्रता संग्राम से 33 साल पहले की बात है। कोई पुरुष उत्तराधिकारी नहीं था, अंग्रेज कित्तूर पर अधिकार करने जा रहे थे। यासीन की शहादत के साथ प्रतिरोध समाप्त हो गया।

अक्टूबर 1824 में, ब्रिटिश युद्ध बलों को भारी जनहानि का सामना करना पड़ा। उन्हें पीछे हटने के लिए मजबूर किया गया, जिससे रानी चेन्नम्मा की जीत हुई। रानी चेन्नम्मा ने दो ब्रिटिश अधिकारियों, श्री स्टीवेन्सन और सर वाल्टर इलियट को युद्धबंदी के रूप में पकड़ लिया, लेकिन बाद में पादरी के साथ एक समझौते के तहत उन्हें रिहा कर दिया। इसका मतलब है कि युद्ध खत्म हो गया है। हालाँकि, चैपलिन ने युद्ध को समाप्त नहीं किया और भारी सुदृढीकरण भेजा। रानी चेन्नम्मा और स्थानीय लोगों ने ब्रिटिश शासन का कड़ा विरोध किया। ठाकरे ने कित्तूर पर आक्रमण किया। आगामी लड़ाई में, सेंट जॉन ठाकरे के साथ सैकड़ों ब्रिटिश सैनिक मारे गए। एक छोटे से राजा के हाथों हार का अपमान अंग्रेजों के लिए बहुत अधिक था। वह मैसूर और सोलापुर से एक बड़ी सेना लेकर आया और कित्तूर को घेर लिया।

रानी चेन्नम्मा ने युद्ध टालने का भरसक प्रयत्न किया; उन्होंने पादरी और बॉम्बे प्रेसीडेंसी के गवर्नर के साथ बातचीत की, जिनके प्रशासन के तहत कित्तूर गिर गया। इसका कोई

असर नहीं हुआ। चेन्नम्मा को युद्ध की घोषणा करने के लिए विवश होना पड़ा। 12 दिनों तक बहादुर रानी और उनके सैनिकों ने अपने किले की रक्षा की, लेकिन हमेशा की तरह गद्दार घुस आए और तोपों में बारूद के साथ मिट्टी और गोबर मिला दिया। रानी हार गई (1824)। रानी चेन्नम्मा को गिरफ्तार कर लिया गया और उन्हें बैलहोंगल के किले में कैद कर दिया गया।

रानी चेन्नम्मा की मृत्यु :

कित्तूर की रानी चेन्नम्मा अंग्रेजों से युद्ध तो नहीं जीत सकीं, लेकिन इतिहास की दुनिया में उन्होंने कई सदियों तक अपनी उपस्थिति दर्ज कराई। वनके ओबव्वा, अब्बक्का रानी और केलदी चेन्नम्मा के साथ, वह कर्नाटक में वीरता के प्रतीक के रूप में पूजनीय हैं।

ईस्ट इंडिया कंपनी के खिलाफ दूसरे युद्ध में, कित्तूर चेन्नम्मा ने अपने उपनायक संग्गोळळी रायन्ना के साथ बुरी तरह लड़ाई लड़ी। दुर्भाग्य से, रानी और उनके प्रमुख अधिकारियों को सेना में गद्दारों द्वारा धोखा दिया गया, जिन्होंने बारूद में गाय का गोबर मिलाकर हथियारों को बेकार कर दिया। रानी चेन्नम्मा को गिरफ्तार कर लिया गया और उन्हें बैलहोंगल के किले में कैद कर दिया गया। कित्तूर की रानी चेन्नम्मा की 51 वर्ष की आयु में 2 फरवरी 1829 को ब्रिटिश हिरासत में मृत्यु हो गई।

कित्तूर चेन्नम्मा की मृत्यु के बाद, उनके उपनायक संगोली रायन्ना ने 1829 तक ब्रिटिश सेना से लड़ना जारी रखा। जब उन्हें ब्रिटिश सेना द्वारा पकड़ लिया गया और मार डाला गया। रानी के दत्तक पुत्र शिवलिंगप्पा को अंग्रेजों ने गिरफ्तार कर लिया और अंत में कित्तूर राज्य के हाथों में आ गया।

■■

G. P. Porwal Arts, Commerce V. V. Salimath Science College, SINDGI
Dist: Vijayapura Karnataka mahadev.sankpalgmail.com Mo: 9972273222